गुजरात और महाराष्ट्र के राज्य स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 1 मई 2024, बुधवार	**समय : 5.00 AM**	**स्थान : रॉयल ग्लोबल विश्वविद्यालय**

नमस्कार,

गुजरात और महाराष्ट्र के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर यहां

- मंचासीन महानुभावों,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण
- असम में रह रहे गुजरात और महाराष्ट्र के हमारे भाइयों और बहनों,
- उपस्थित देवियों और सज्जनों !

मैं राजभवन परिवार की ओर से आप सभी का इस कार्यक्रम में स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूं।

आज हम सभी यहां गुजरात और महाराष्ट्र का 64वां स्थापना दिवस मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। मैं आप सभी को गुजरात और महाराष्ट्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

देवियो और सज्जनो,

एक वर्ष पूर्व आज ही के दिन राजभवनों में देश के सभी राज्यों के स्थापना दिवस मनाने की स्वस्थ परंपरा की शुरुआत की गई थी। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि हमने "एक भारत श्रेष्ठ भारत" के उद्देश्य से वर्ष भर इस परंपरा का सफलतापूर्वक पालन किया। हमने उत्साह के साथ देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शाषित प्रदेशों का स्थापना मनाया। आज एक वर्ष बाद फिर से हमें एकजुट होकर गुजरात और महाराष्ट्र के स्थापना दिवस का जश्न मनाने का अवसर प्राप्त हुआ है।

यह भारत सरकार की एक अभिनव पहल है। मैं समझता हूँ कि इस पहल से लोगों के बीच प्रेम, सामाजित समरसता, एकता और बंधुत्व की भावना निरंतर मज़बूत हो रही है। इससे प्रदेशवासियों को अन्य राज्यों की समृद्ध कला-संस्कृति, रहन-सहन, कौशल के बारे में जानने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

आज इस आयोजन के माध्यम से लोगों को गुजरात और महाराष्ट्र के बारे में जानने और समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

देवियो और सज्जनो,

आज भारत के नक्शे पर गुजरात और महाराष्ट्र राज्य का जो स्वरूप दिख रहा है, आजादी मिलने के समय यह अस्तित्व में नहीं था। यह बॉम्बे राज्य का एक हिस्सा था। गुजरात एवं मराठी भाषियों के बीच आये दिन भाषा और संस्कृतियों को लेकर मतभेद होते थे। 1950 से मराठी एवं गुजराती भाषियों ने अलग राज्य की मांग रखी।

एक तरफ जहां गुजरात बनाने के लिए इंदुलाल याग्निक के नेतृत्व में गुजरातियों ने महागुजरात आंदोलन शुरू किया, वहीं दूसरी तरफ मराठी भाषियों ने भी महाराष्ट्र के निर्माण के लिए संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन शुरू किया।

यह मांग जब खूनी संघर्ष में बदलने लगी, तब तत्कालीन केंद्र सरकार ने 1 मई 1960 को बॉम्बे को भाषा, क्षेत्र और संस्कृति के आधार पर दो विभिन्न राज्यों महाराष्ट्र एवं गुजरात में विभाजित कर दिया।

इसलिए 1 मई गुजरात और महाराष्ट्र के लोगों के लिए महत्वपूर्ण दिन है। आज मजदूर दिवस भी है और हमें यह याद रखना चाहिए कि गुजरात और महाराष्ट्र के गठन में मजदूरों का भी खून-पसीना मिला हुआ है। इसलिए यह दिन दोनों राज्यों के लोगों को अपनी जड़ों को याद करने और राज्य के गठन के लिए लड़ने वालों को श्रद्धा सुमन अर्पित करने का अवसर प्रदान करता है।

भाषा और सांस्कृतिक मतभेदों के कारण गुजरात और महाराष्ट्र अलग हुए थे, लेकिन "एक भारत श्रेष्ठ भारत" पहल के तहत आज ये दोनों राज्य एक-दूसरे का स्थापना दिवस मना रहे हैं। असम की तरह देश के अन्य राज्यों में भी वहां बसे गुजरात और महाराष्ट्र के लोग मिलकर दोनों राज्यों का स्थापना दिवस मना रहे होंगे।

वास्तव में यह पहल देश की विविधता में एकता की अवधारणा को और मजबूत कर रही है। यह हमारे मानानीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शी सोच से संभव हो रहा है। मैं इसके लिए उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

देवियो और सज्जनो,

भले ही 1960 में गुजरात राज्य के रूप में आस्तित्व में आया, लेकिन इसका इतिहास लगभग 2000 साल पुराना है। गुजरात में छठी शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक गुर्जर जनजाति का साम्राज्य रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता में भी गुजरात के कुछ स्थानों का जिक्र आता है। यहां अधिकांश समय गुर्जर जनजाति के लोगों ने राज किया है। यही कारण है कि पुराने समय में गुजरात को "गुर्जरत्रा" के नाम से जाना जाता था।

महाराष्ट्र का इतिहास भी काफी पुराना है। सबसे पहले इस राज्य में सातावाहन राजवंश और उसके बाद वाकाटक वंश का राज्य रहा है। इसके पश्चात इस क्षेत्र पर कलचुरी, चालुक्य, यादव, दिल्ली के खिलजी और बहमिनी वशों ने शासन किया। इसके बाद केंद्रीय सत्ता बिखरकर छोटी-छोटी सल्तनतों में बदल गई।

सत्रहवीं शताब्दी में शिवाजी महाराज के प्रभावशाली बनने के बाद आधुनिक मराठा राज्य का उदय हुआ। शिवाजी ने बिखरी ताकतों को एकजुट कर शक्तिशाली सैन्य बल का संगठन किया। इस सेना की मदद से मुगलों को दक्षिण से आगे बढ़ने से रोका।

लेकिन, शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद मराठा शक्ति बिखरने लगी। शिवाजी के उत्तराधिकारियों की विफलता के कारण पेशवाओं ने सत्ता पर अधिकार कर लिया। सन् 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई के बाद मराठा शक्ति पूरी तरह से बिखर गई।

अंततः 1818 तक अंग्रेजों ने सम्पूर्ण मराठा क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। फिर से 1875 में नाना साहब के सैनिकों ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महाराष्ट्र के लोगों को सक्षम नेतृत्व प्रदान किया।

अगर हम देश की स्वतंत्रता आंदोलन की बात करें तो गुजरात ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महात्मा गांधी, सरदार बल्लवभाई पटेल, दादा भाई नोरौजी जैसे महान विभूतियों ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन को एक नया आयाम देने का कार्य किया।

स्वतंत्रता संग्राम में महाराष्ट्र सबसे आगे था। मुंबई तथा महाराष्ट्र के अन्य शहरों के अनगिनत नेताओं ने पहले लोकमान्य तिलक और बाद में महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में आंदोलन को आगे बढ़ाया। गांधीजी ने भी अपने आंदोलन का केंद्र महाराष्ट्र को बनाया था और गांधी युग में राष्ट्रवादी देश की राजधानी सेवाग्राम थी।

गुजरात भारत में औद्योगिक रूप से सबसे उन्नत राज्यों में से एक है और इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वहीं महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई को भारत की वित्तीय राजधानी के रूप में जाना जाता है और यहां प्रमुख कॉर्पोरेट और वित्तीय संस्थानों का मुख्यालय है।

आधुनिक भारत के निर्माण में गुजरात और महाराष्ट्र के युवाओं ने प्रभावशाली योगदान दिया है। देश के विभिन्न भागों में वो अपनी प्रबंधन क्षमताओं और कुशलताओं से समावेशी विकास को एक नई दिशा प्रदान कर रहे हैं।

महाराष्ट्र कई मंदिरों, किलों, पुराने स्मारकों और कला समेटे हुए है। यहां का प्रत्येक किला मराठा साम्राज्य के गौरवशाली इतिहास की कहानी कहता है। महाराष्ट्र के किले सैन्य विजय के प्रतीक के रूप में जाने जाते है। ये सभी किले छत्रपति शिवाजी से जुड़े हैं।

गुजरात भी अपनी समृद्ध संस्कृति, ऐतिहासिक महत्व, हस्तशिल्प और पर्यटन आकर्षणों के लिए जाना जाता है। लोथल, जो अहमदाबाद और ढोलावीरा के करीब है, उसके पास कच्छ के करीब ही हड़प्पा संस्कृति के निशान पाये जाते हैं, जो लगभग चार हजार साल पुराने हैं।

गुजरात अपनी संस्कृति और खानपान के लिए जाना जाता है। देश-दुनिया से पर्यटक यहां की संस्कृति और शहरों को देखने आते हैं। गुजरात पैर रखने वाले कुओं, जैन मंदिरों, एशियाई शेरों और व्यापारी लोगों के लिए जाना जाता है।

धर्म कर्म के लिए भी गुजरात अपनी पहचान बनाए हुआ है। यहां कई ऐसे प्रसिद्ध मंदिर है, जहां दर्शन करने के लिए भक्तों का तांता लगा रहता है। सोमनाथ, अक्षरधाम, द्वारकाधीश और यहां के अन्य प्रसिद्ध मंदिरों में हर साल लाखों लोग दर्शन करने आते हैं।

हमारा भारत विविधता में एकता की भूमि है। पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक, हम ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से एकजुट हैं। असम और गुजरात के बीच संबंधों की गहरी और ऐतिहासिक जड़ें हैं, जो चार हजार साल से भी अधिक पुरानी हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान कृष्ण ने असम में कुंडी साम्राज्य की राजकुमारी रुक्मिणी से विवाह किया था। असम के प्रसिद्ध गायक 'भारत रत्न' डॉ. भूपेन हजारिका ने भी गुजरात की प्रियंबदा पटेल से विवाह किया था। यह असम और गुजरात के बीच मजबूत संबंध को प्रमाणित करता है।

इसी तरह असम और महाराष्ट्र में भी समानताएं हैं। हमारे वीर लाचित बरफुकन और महाराष्ट्र के छत्रपति शिवाजी से बहुत समानता थी। दोनों ही गुरिल्ला युद्ध में पारंगत थे। उन्होंने शक्तिशाली मुगलों को हराया था। उनकी वीरता हमें राष्ट्र के विकास में योगदान के लिए प्रेरित करती है।

महाराष्ट्र को एक महान संस्कृति और मेहनती लोगों का आशीर्वाद प्राप्त है, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय प्रगति में योगदान दिया है। गुजरात ने सर्वांगीण प्रगति के साथ-साथ अपनी अनूठी संस्कृति के कारण अपनी छाप छोड़ी है। मैं भविष्य में महाराष्ट्र और गुजरात की निरंतर प्रगति की कामना करता हूं।"

इस पवित्र मौके पर, मैं असम में रह रहे गुजरात और महाराष्ट्र के सभी भाई-बहनों सहित आज सभागार उपस्थित सभी लोगों का हृदय की गहराइयों से धन्यवाद व आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही असम को सम्पन्न, समृद्ध और खुशहाल बनाने में आपकी सक्रिय भागीदारी की अपेक्षा भी करता हूँ।

पुनः आप सभी को गुजरात और महाराष्ट्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।